Volume: 4 Issue: 6 Pages: 136-139

प्रेमचंद की कहानियों में मानवेतर संवेदनाएं: अधिकार चिंता, स्वत्त्व रक्षा, मुक्तिधन, और पूर्व संस्कार के विशेष सन्दर्भ में

[*1] छवि राज

[*1] पीएचडी शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मानविकी विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), मैदान गढ़ी, नई दिल्ली, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 27/ May/2025
Accepted: 24/June/2025

***Corresponding Author**
छवि राज
पीएचडी शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मानविकी विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), मैदान गढ़ी, नई दिल्ली, भारत।

सारांश:
प्रस्तुत शोध पत्र में मुंशी प्रेमचंद की कहानियों के अंतर्गत पशु-पक्षियों के प्रति अभिव्यक्त करुणा, नैतिकता और संवेदनशीलता के विविध पक्षों का विश्लेषण किया गया है। 'अधिकार चिंता', 'स्वत्व रक्षा', 'मुक्तिधन' और 'पूर्व संस्कार' जैसी कहानियाँ दर्शाती हैं कि प्रेमचंद की दृष्टि केवल मानव-केन्द्रित न होकर समस्त जीव-जगत की चेतना को सहानुभूति और गरिमा से देखती है। कहानी 'अधिकार चिंता' में टॉमी नामक कुत्ते के माध्यम से सत्ता, असुरक्षा और उपनिवेशवाद का प्रतीकात्मक चित्रण किया गया है, जबकि 'स्वत्व रक्षा' में आत्मसम्मान की रक्षा के लिए संघर्षरत घोड़े की कथा के माध्यम से सामाजिक रीति-रिवाजों पर व्यंग्य किया गया है। 'मुक्तिधन' में रहमान और दाऊदयाल के माध्यम से करुणा, धर्मनिरपेक्षता और पशु-प्रेम को मानवता का आधार माना गया है। वहीं 'पूर्व संस्कार' में एक बैल के रूप में जन्मे आत्मा के माध्यम से पुनर्जन्म, प्रायश्चित और मोक्ष की आध्यात्मिक अवधारणा को उकेरा गया है। इन कहानियों के माध्यम से प्रेमचंद यह संदेश देते हैं कि पशु-पक्षी भी संवेदना, करुणा और अधिकारों के अधिकारी हैं।

मुख्ये शब्द: मानवेतर संवेदना, पशु-पक्षी, प्रेमचंद की कहानियाँ, नैतिकता और करुणा, पुनर्जन्म और मुक्ति, प्रतीकात्मकता, सामाजिक यथार्थ

प्रस्तावना:

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के केंद्रीय और सशक्त व्यक्तित्व हैं। उनका रचना संसार अत्यंत विराट और बहुआयामी है। प्रेमचंद का साहित्य भारतीय जनमानस में हमेशा से ही अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। उन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लेखन किया, परंतु उन्हें सर्वाधिक ख्याति उनकी कहानियों के माध्यम से प्राप्त हुई। उनकी कहानियों ने सदैव पाठकों का मार्गदर्शन एवं ज्ञानवर्धन किया है। उनकी कहानियों में एक ओर मानव जीवन के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, आशा-आकांक्षा, स्वप्न तथा संघर्षों का जीवंत चित्रण मिलता है, तो दूसरी ओर मानवेतर पात्रों जैसे पशु-पक्षी और अन्य जीव-जंतुओं के प्रति भी गहरी संवेदना दिखाई देती है। उनकी सभी उपलब्ध कहानियों का अवलोकन करने पर पशु-पक्षियों पर आधारित कई बेहतरीन कहानियाँ सामने आती हैं। दो बैलों की कथा, पूस की रात, पूर्वसंस्कार, स्वत्व रक्षा, मुक्तिधन, अधिकार चिंता, दूध का दाम, आत्माराम, नागपूजा, लैला का कुत्ता, सैलानी बंदर, वारदात: कोई दुःख न हो तो बकरी खरीद लो, नादान दोस्त आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं, जिनमें पशु-पक्षियों की उपस्थिति कथानक का अभिन्न हिस्सा है। प्रेमचंद की कहानियों में मानवेतर संवेदनाओं का अध्ययन आज के सामाजिक और साहित्यिक संदर्भ में इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि उनकी संवेदना केवल मनुष्य तक सीमित नहीं रहती, बल्कि संपूर्ण प्रकृति और जीव-जगत तक विस्तार पाती है। आज जब पर्यावरण संकट, जीव-जंतुओं के अधिकार, संरक्षण और समग्र जीवन दृष्टिकोण को लेकर वैश्विक स्तर पर गंभीर चर्चा हो रही है, तब प्रेमचंद की दृष्टि और भी प्रासंगिक हो जाती है। उनके साहित्य में निहित यह व्यापक दृष्टिकोण न केवल साहित्य को एक समावेशी विमर्श से जोड़ता है, बल्कि मानवीय चेतना को भी करुणा और सह-अस्तित्व की दिशा में उन्मुख करता है।

प्रेमचंद की कहानियों में मानवेतर पात्र सामाजिक अन्याय, शोषण और परंपरागत जड़ताओं के विरुद्ध आवाज उठाते दिखाई देते हैं। उनकी कहानियों में मानवेतर संवेदनाएं मात्र प्रतीक भर नहीं हैं, बल्कि जीवंत चेतना के रूप में उभरती हैं और वह मानवीय मूल्यों, संघर्षों और सामाजिक चेतना के प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ बन

जाती हैं। इस प्रकार, प्रेमचंद की कहानियों का यथार्थवाद केवल सामाजिक स्थितियों तक सीमित न होकर मानवीय संवेदनाओं और आंतरिक भाव-जगत को भी गहराई से छूता है।

मानवेतर पात्र से संबंधित 'अधिकार चिंता' अधिकार एवं असुरक्षा की भावना से ग्रसित कहानी है| यह कहानी टामी नामक कुत्ते की जीवन-यात्रा के माध्यम से एक प्रतीकात्मक सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य प्रस्तुत करती है।

कहानी का नायक टॉमी शुरू में एक आम, डरपोक लेकिन चालाक कुत्ता है जो शहर की गलियों में जीवित रहने के लिए संघर्ष करता है। वह भूख और मार से त्रस्त है, मगर शिकार करने की कल्पना करता है- "वह किसी ऐसी जगह जाना चाहता था, जहाँ ख़ूब शिकार मिले; खरगोश, हिरन, भेड़ों के बच्चे मैदानों में विचर रहे हों और उनका कोई मालिक न हो, जहाँ किसी प्रतिद्वंद्वी की गंध तक न हो; आराम करने को सघन वृक्षों की छाया हो, पीने को नदी का पवित्र जल। वहाँ मनमाना शिकार करूँ, खाऊँ और मीठी नींद सोऊँ। वहाँ चारों ओर मेरी धाक बैठ जाय, सब पर ऐसा रोब छा जाय कि मुझी को अपना राजा समझने लगें और धीरे-धीरे मेरा ऐसा सिक्का बैठ जाय कि किसी द्वेषी को वहाँ पैर रखने का साहस ही न हो।" [1] यह उसकी आज़ादी और अधिकार की कल्पना है। एक दिन उसकी यह अभिलाषा पूर्ण हो जाती है तथा वह एक नदी को पार कर जंगल में पहुँच जाता है। वहाँ वह धीरे-धीरे सत्ता की सीढ़ियाँ चढ़ता है और एक दिन वह जंगल का राजा बन बैठता है।

टामी जंगल में सत्ता प्राप्त करने के बाद उसी छल, अफवाह, फूट डालो और राज करो की नीति अपनाता है, जो मानव समाज और राजनीति में प्रचलित है। वह जंगल के अन्य जानवरों को आपस में लड़वाकर स्वयं को सर्वोच्च बनाता है, जो सत्ता की राजनीति का पशुवत रूप है। "वह कभी किसी पशु से कहता तुम्हारा फलाँ शत्रु तुम्हें मार डालने की तैयारी कर रहा है, किसी से कहता फलाँ तुमको गाली देता था। जंगल के जंतु उसके चकमे में आ कर आपस में लड़ जाते और टामी की चाँदी हो जाती।" [2] यह आज के समाज, राजनीति और वैश्विक सत्ता-संरचना की गहरी प्रतीकात्मक आलोचना प्रस्तुत करती है। जंगल में टामी द्वारा सत्ता प्राप्त करने की प्रक्रिया आज के राजनीतिज्ञों, शासकों और साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों का सटीक चित्रण है, जहाँ फूट डालो और राज करो जैसी नीतियाँ सच और नैतिकता के त्याग पर आधारित होती हैं।

किंतु सत्ता प्राप्त करने के बाद उसका सबसे बड़ा भय यही बन जाता है कि कहीं वह इसे खो न दे। वह न तो विश्राम कर पाता है, न किसी से सच्चा संबंध बना पाता है- "टामी को अब कोई चिंता थी तो यह कि इस देश में मेरा कोई मुद्दई न उठ खड़ा हो। वह सजग और सशस्त्र रहने लगा।...आखिरकार यह हुआ कि टामी को क्षण भर भी शांति से बैठना दुर्लभ हो गया। वह रात-दिन दिन-दिन भर नदी के किनारे इधर से उधर चक्कर लगाया करता। दौड़ते-दौड़ते हाँफने लगता बेदम हो जाता मगर चित्त को शांति न मिलती।" [3] इससे यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक सत्ता के साथ गहरा असुरक्षा-बोध और अकेलापन जुड़ा होता है। टामी का अकेलापन, भ्रम और चिंता आधुनिक मनुष्य की उस मानसिक विडंबना को उजागर करता है, जिसमें सत्ता और भोग की ऊँचाइयों पर खड़े व्यक्ति भीतर से भय और अस्थिरता से ग्रस्त होते हैं।

अंततः वह बिना किसी वास्तविक युद्ध के केवल शत्रु के भ्रम, भय और शंका के कारण दम तोड़ देता है। उसकी मृत्यु न वीरगति कहलाती है, न ही कोई पशु उसके प्रति संवेदना व्यक्त करता है। यह अंत अति-सत्ता का लोभ, सुरक्षा की चिंता और आत्म-वंचना का दुखद परिणाम है। "अन्त में सातवें दिन अभागा टामी अधिकार-चिन्ता से ग्रस्त जर्जर और शिथिल होकर परलोक सिधारा। वन का कोई पशु उसके निकट न गया। किसी ने उसकी चर्चा तक न की किसी ने उसकी लाश पर आँसू तक न बहाये।" [4] सत्ता और स्वार्थ का कुचक्र जो अंततः टामी के ही मृत्यु का कारण बनता है, यह उन शासकों की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है जो सदैव विरोध से डरते हैं और आत्म-रक्षा में ही जीवन गंवा देते हैं। इसके साथ ही, यह उपनिवेशवाद की प्रतीकात्मक आलोचना भी करता है, जहाँ बाहरी शक्तियाँ स्थानीय समाजों पर अधिकार कर यह दावा करती हैं कि उन्हें ईश्वर ने शासन के लिए भेजा है। "टामी भी अब अपनी शिकारबाजी के जौहर दिखा कर उनकी इस भ्रांति को पुष्ट किया करता था। बड़े गर्व से कहता- परमात्मा ने मुझे तुम्हारे ऊपर राज्य करने के लिए भेजा है। यह ईश्वर की इच्छा है।" [5] कहानी यह भी दर्शाती है कि सत्ता की भूख में मनुष्य न केवल अन्य मनुष्यों, बल्कि संपूर्ण प्रकृति और जीव-जंतुओं का दोहन करता है। शक्तिशाली प्राणी निर्बलों को केवल भोजन या सेवा के साधन के रूप में देखते हैं। कहानी में 'शहर की गलियाँ' पूंजीवादी औद्योगीकरण के उस आरंभिक दौर का प्रतिनिधित्व करती हैं जहाँ निम्न तबके के प्राणी उत्पीड़न, अभाव और संघर्ष से जूझते हैं। टामी का संघर्ष, उपेक्षा और भूख यह सब उस औद्योगिक समाज के हाशिये पर पड़े प्राणियों की असहाय स्थिति को दर्शाता है, जहाँ संसाधनों पर कुछ गिने-चुने वर्ग का अधिकार होता है और अन्य प्राणी वंचित रह जाते हैं। इसके विपरीत, 'जंगल' एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ अवसर तो है, पर नियंत्रण नहीं। टॉमी जैसे प्राणियों की सत्ता-लिप्सा, छल-कपट, और शोषण यहाँ स्वार्थपरक औद्योगिक प्रवृत्तियों का रूप ले लेती है, और विकास की आड़ में प्रतिस्पर्धा, हिंसा और संसाधनों का उपभोग मुख्य उद्देश्य बन जाता है। 'नदी' इस पूरे परिवर्तन की प्रतीक है। यह जीवन के उस संक्रमण-बिंदु को दर्शाती है जहाँ टामी संघर्ष से निकलकर सत्ता की ओर बढ़ता है, किंतु यही नदी आगे चलकर मोक्ष अथवा पतन के प्रवेशद्वार के रूप में भी उभरती है, जो उसके जीवन की दिशा को निर्णायक रूप से बदल देती है। नदी की प्रतीकात्मकता इस तथ्य में निहित है कि हर संक्रमण-बिंदु स्वयं में उत्थान और पतन दोनों की संभावनाएँ साथ लेकर आता है। यह निर्भर इस बात पर करता है कि पार करने वाला किस दृष्टिकोण और मूल्यबोध से उसे पार करता है।

'स्वत्व रक्षा' कहानी का केंद्रीय पात्र एक घोड़ा है, जो आत्मगौरव से भरा हुआ है। वह अपने स्वामी मीर दिलावर अली के प्रति पूरी निष्ठा रखता है। मीर दिलावर अली साधारण जीवन जीने वाले, परंतु एक सहृदय और संवेदनशील इंसान हैं। वह भी अपने घोड़े की सीमाओं, आदतों और स्वाभाव का आदर करते हैं और उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाने से बचते हैं। वहीं मुंशी सौदागर लाल एक घमंडी और दबाव डालने वाले व्यक्ति हैं, जो तात्कालिक स्वार्थ के चलते विवेकहीन हो जाते हैं। वह सामाजिक रीति-रिवाजों और दिखावे के गुलाम हैं और इन्हीं की पूर्ति हेतु एक बेजुबान जानवर पर अत्याचार करने से भी नहीं हिचकते।

कहानी की मुख्य विषयवस्तु स्वत्व और आत्मसम्मान के महत्व को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती है। घोड़ा रविवार के दिन विश्राम को अपना अधिकार समझता है, लेकिन यहीं अधिकार जब बाधित होने पर आता है तो वह अपने आराम के दिन 'रविवार' में विघ्न डालने वाले की चेष्टा को पहचान कर असहमति और प्रतिरोध के संकेत देने लगता है- "मगर ज्यों ही मुंशी जी अस्तबल में पहुँचे, घोड़े ने शशंक नेत्रों से देखा और एक बार हिनहिना कर घोषित किया कि तुम आज मेरी शांति में विघ्न डालने वाले कौन होते हो। बाजे की धड़-धड़, पों-पों से वह उत्तेजित हो रहा था। मुंशी जी ने जब पगहे को खोलना शुरू किया तो उसने कनौतियाँ खड़ी कीं और अभिमानसूचक भाव से हरी-हरी घास खाने लगा।" [6] यह दृश्य घोड़े के स्वाभिमान और असहमति के सूक्ष्म संकेतों का सुंदर चित्रण करता है। वह मुंशी जी की उपस्थिति को पूरी तरह नकारते हुए, अपनी पसंदीदा घास की ओर ध्यान देकर उन्हें अनदेखा करता है।

वह किसी भी प्रकार के दबाव या हिंसा के सामने झुकने को तैयार नहीं होता। वह अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है, भले ही उसे इसके लिए मार क्यों न खानी पड़े। "उसके नथनों से खून निकल रहा था, चाबुकों से सारा शरीर छिल गया था, पिछले पैरों में घाव हो गये

थे, पर वह दृढ़-प्रतिज्ञ घोड़ा अपनी आन पर अड़ा हुआ था।" [7] यहाँ घोड़ा अनेकों अत्याचार सहने के बावजूद अपने आत्म-सम्मान से समझौता करने को तैयार नहीं है। प्रेमचंद एक घोड़े के माध्यम से यह बताने का प्रयास किए हैं कि हर प्राणी चाहे वह बोल न सके, पर अत्याचार, अपमान और अन्याय को समझता है और उसका विरोध भी कर सकता है। यहाँ घोड़ा केवल एक अड़ियल घोड़ा नहीं, बल्कि वह प्रतीक है जो बताता है कि जब व्यक्ति या प्राणी अपने नैतिक अधिकारों, अपने स्वाभाविक जीवन-पद्धति, और आत्म-सम्मान के लिए अडिग हो जाता है, तो दुनिया की कोई ताक़त उसे मजबूर नहीं कर सकती। कहानी की करुणा इसी बात में है कि एक मूक जानवर भी इतना दृढ़ निश्चयी हो सकता है, जिसकी पीड़ा, आत्मबल और मौन विद्रोह इंसान को आत्म-चिंतन के लिए मजबूर कर दें।

परंपरा और सामाजिक दिखावे पर किया गया व्यंग्य इस कहानी का दूसरा महत्वपूर्ण विषय है| विवाह जैसे अवसरों पर दूल्हे का पैदल न चलना प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है, जिससे कई हास्यास्पद स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। लेखक इस प्रवृत्ति पर तीखा प्रहार करते हैं कि कैसे समाज दिखावे के लिए क्रूरता और मूर्खता को भी उचित ठहराने लगता है। "मुंशी जी क्रोधोन्मत्त होकर रो पड़े। वर एक कदम भी पैदल नहीं चल सकता। विवाह के अवसर पर भूमि पर पाँव रखना वर्जित है, प्रतिष्ठा भंग होती है, निंदा होती है, कुल को कलंक लगता है पर अब पैदल चलने के सिवाय अन्य उपाय न था। आ कर घोड़े के सामने खड़े हो गए और कुंठित स्वर से बोले महाशय, अपना भाग्य बखानो कि मीर साहब के घर हो। यदि मैं तुम्हारा मालिक होता तो तुम्हारी हड्डी-पसली का पता न लगता।" [8] यहाँ विवेक और संवेदना के अभाव को उजागर किया गया है। मुंशी जी द्वारा घोड़े पर अत्याचार करना वो भी केवल एक रस्म निभाने के लिए, दरअसल उसकी आत्मा और शरीर को तोड़ने का प्रयास है, जिसका प्रेमचंद ने हास्य एवं के माध्यम से सामाजिक विडंबनाओं का गंभीर भंडाफोड़ किया है। अंततः, घोड़े के माध्यम से अहिंसा और सत्याग्रह की छवि उभर कर सामने आती है। वह एक सत्याग्रही की तरह व्यवहार करता है| उसे उसके आत्म-सम्मान से न तो मार, न लालच, न धमकी विचलित कर सकती है।

इस प्रकार यह कहानी की मूल संवेदना आत्मसम्मान, विवेक और करुणा की शक्ति को उजागर करती है। आज भी हम अनेक बार ऐसे प्रसंग देखते हैं जहाँ व्यक्ति या समाज दबाव, रस्म, परंपरा या सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम परअपने विवेक और संवेदना को ताक पर रख देता है। विवाह, उत्सव, सामाजिक प्रदर्शन आदि में दिखावे की होड़ इतनी बढ़ जाती है कि भावनाएँ, करुणा और नैतिकता गौण हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में यह कहानी यह सिखाती है कि एक मूक प्राणी भी अपने आत्मसम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायसंगत विरोध कर सकता है।

प्रेमचंद की कहानी 'मुक्तिधन' गाय के प्रति प्रेम व अनुराग की कहानी है। गाय इस कहानी में एक व्यक्ति को उसके कर्ज से मुक्ति प्रदान करने का कारण बनती है। कहानी में एक गरीब मुस्लिम किसान रहमान लाचार वश अपनी जान से प्यारी गाय को बाजार में बेचने जाता है परन्तु वह अपनी गाय को ज्यादा दाम मिलने के बावजूद कम दामों में ही लाला दाऊदयाल को बेचता है। "हुजुर, आप हिन्दू हैं इस लेकर आप पालेंगे , इसकी सेवा करेंगे। ये सब कसाई हैं, इनके हाथ मै 50 रुपया को भी कभी न बेचता। आप बड़े मौके से आ गए , नहीं तो ये सब जबरदस्ती से गऊ को छीन ले जाते। बड़ी विपत में फस गया हूँ सरकार , तब यह गाय बेचने निकला हूँ। नहीं तो इस घर की लक्ष्मी को कभी न बेचता। इसे अपने हाथो से पाला – पोसा है। इन कसाइयों के हाथ कैसे बेच देता?" [9] यहाँ रहमान को लाचारीवश गाय जब बेचनी पड़ती है, तब वह कसाइयों के बीच खड़ा होता है, जहाँ उसे लाभ का अवसर मिल सकता है। परन्तु वह पांच रुपये का घाटा उठाकर गाय को एक ऐसे व्यक्ति के हाथ देता है जिसपर उसे विश्वास है कि वह गाय की सेवा करेगा और इस तरह उसका वध नहीं होगा। इस प्रकार गाय यहाँ धर्मनिरपेक्ष मूल्यों का वाहक बन जाती है, जहाँ एक मुसलमान उसे हिफाज़त से बेचता है, और एक हिंदू उसकी सेवा करता है।

दाऊदयाल एक कठोर सूदखोर, शर्तों से भरा व्यवहार करने वाले ठेठ महाजन हैं, लेकिन जब वे रहमान की गाय के प्रति संवेदनशीलता और उसका त्याग देखते हैं, तो वह दृश्य उनके अंतःकरण को झकझोर देता है। "दाऊदयाल ने चकित हो कर रहमान की ओर देखा। भगवान्! इस श्रेणी के मनुष्य में भी इतना सौजन्य, इतनी सहृदयता है!" [10] यह समाज के सबसे पीड़ित वर्ग गरीब किसान के जीवन संघर्ष को केंद्र में दिखाता है, और यह भी दिखाता है कि भौतिक संसाधनों से वंचित व्यक्ति भी उच्च मानवीय मूल्यों पर खरा उतर सकता है।

दाऊदयाल गाय के माध्यम से ही धन से धर्म की ओर और कठोरता से करुणा की ओर यात्रा आरंभ करते हैं। वहीं दाऊदयाल जो 32 रुपये सैकड़ा ब्याज लेते थे, न केवल पूरा कर्ज माफ करते हैं, बल्कि रहमान को दो बछड़े वापस भी दे देते हैं- "तुम्हारे दोनों बछड़े मेरे यहाँ हैं, जी चाहे लेते जाओ, तुम्हारी खेती में काम आयेंगे। तुम सच्चे और शरीफ आदमी हो, मैं तुम्हारी मदद करने को हमेशा तैयार रहूँगा।" [11] दादूदयाल में यह परिवर्तन गाय से प्राप्त होने वाले दूध के कारण नहीं, बल्कि उस करुणा से उपजता है जिसे रहमान ने एक जीव के लिए दर्शाया था। इस प्रकार यहाँ गाय केवल एक जानवर नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना, आस्था, नैतिकता और करुणा का केंद्र बन जाती है और वह कथा के दोनों ही मुख्य पात्रों रहमान और लाला दाऊदयाल के नैतिक विकास का प्रेरक बनती है। "तुमने भले ही जानकर मेरे ऊपर कोई एहसान न किया हो, पर असल में वह मेरे धर्म पर एहसान था। मैंने भी तो तुम्हें धर्म के काम ही के लिए रुपये दिये थे। बस हम-तुम दोनों बराबर हो गये।" [12] यह संवाद स्पष्ट करता है कि प्रेमचंद के अनुसार धर्म का मर्म जीव रक्षा, संवेदना, सहायता और समानुभूति से है। एक तरफ रहमान ने गऊ को बचाकर धर्म निभाया वहीं दाऊदयाल ने हज यात्रा के लिए कर्ज देकर धर्म निभाया। आधुनिक समाज में जहाँ लाभ और स्वार्थ प्रमुख हो गये हैं, वहाँ रहमान की करुणा और लाला दाऊदयाल का अंततः किया गया नैतिक निर्णय इस बात को रेखांकित करता है कि मानवता आज भी सर्वोच्च मूल्य है।

इस प्रकार, कहानी अंततः एक ऐसे भावनात्मक बंधन में परिणत होती है जहाँ एक महाजन रहमान का कर्ज केवल इसलिए माफ कर देता है क्योंकि उसने एक जीव की रक्षा के लिए पाँच रुपये का नुकसान उठाया था। सौदे की बात में जहाँ गाय एक ओर वस्तु के रूप में आई है, तो वहीं दूसरी ओर वह जीवित, संवेदनशील प्राणी के रूप में। "अगर तुमने यह गऊ कसाइयों को दे दी होती, तो मुझे इतना फायदा क्योंकर होता? तुमने उस वक्त पाँच रुपये का नुकसान उठाकर गऊ मेरे हाथ बेची थी। वह शराफत मुझे याद है। उस एहसान का बदला चुकाना मेरी ताकत से बाहर है।" [13] दाऊदयाल यह स्वीकार करते हैं कि रहमान के लिए गाय का सौदा करना सिर्फ आर्थिक नहीं था, बल्कि जीवन रक्षा और नैतिकता का निर्णय था। वह इस सौदे को मुनाफा कमाने का माध्यम नहीं, बल्कि करुणा के कारण मिला आशीर्वाद मानते हैं और इस तरह रहमान और दाऊदयाल दोनों ही गाय को 'वस्तु' की दृष्टि से देखना छोड़कर 'जीव' की तरह देखना शुरू कर देते हैं। यह घटनाक्रम दिखाता है कि पशु-प्रेम, मानव को भी परिष्कृत बना सकता है। रहमान की करुणा और दया, लाला दाऊदयाल की धर्मपरायणता और पशु-कल्याण की भावना को जागृत करती है। लाला दाऊदयाल अंततः कहते हैं कि "असल में मैंने तुमसे जो कर्ज लिया था, वही अदा कर रहा हूँ।" [14] दाऊदयाल यह स्वीकार कर चुके होते हैं कि रहमान की करुणा और धर्मपरायणता इतनी बड़ी है कि वह कोई भी धनात्मक कर्ज़ चुकाने के लिए पर्याप्त है। वह रहमान के पशु के प्रति सद्भाव को ही 'मुक्तिधन' मानते हैं। इस तरह कहानी में गाय रहमान और लाला

दाऊदयाल के लिए 'मुक्तिधन' बनती है। वह धन जिससे दोनों पात्र अपनी आत्मा का उद्धार करते हैं। यह परिवर्तन ही इस कहानी की विशिष्टता बनती है।

'पूर्व-संस्कार' छोटे भाई की मृत्यु के बाद जन्मे बैल और उससे उत्पन्न प्रेम की कहानी है। हमेशा धर्म की राह पर चलने वाला शिवटहल नामक पात्र एक अपराध के कारण बछड़े के रूप में अपने ही भाई रामटहल के घर में जन्म लेता है। शिवटहल अपने भाई की पूंजी को अपने सद्कर्मों और धर्म के कार्य में लगाकर नष्ट किया होता है, इस कारण ही रामटहल को हुई हानि की पूर्ति करने हुते बछड़े के रूप में जन्म लेकर आना पड़ता है। वह छठवां वर्ष आते ही अपना पूर्व जन्म का प्रायश्चित पूर्णकर निर्वाण प्राप्त कर लेता है।

इस कथा में बछड़े जवाहिर को एक साधारण पशु नहीं बल्कि देवरूप नंदी के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है- "आप बड़े भाग्यशाली पुरुष हैं कि आपको ऐसे देवरूप नंदी की सेवा का अवसर मिल रहा है। इन्हें पशु न समझिए, यह कोई महान् आत्मा हैं। इन्हें कष्ट न दीजिएगा। इन्हें कभी फूल से भी न मारिएगा।" [15] रामटहल उसके प्रति केवल देखभाल की भावना नहीं रखते, बल्कि उसे एक आत्मा, एक जीवात्मा मानते हैं जिसकी सेवा मनुष्य के स्तर की नहीं, बल्कि ईश्वर की आराधना के समान होती है। उसे चाँदी का हार पहनाना, रेशमी झाँझें बनवाना, विशेष भोजन देना और अपनी देखरेख में उसकी सेवा करना यह सब संकेत करता हैं कि प्रेमचंद की दृष्टि में पशु को मानवीय गरिमा से भी ऊपर स्थान दिया गया है। जब उसकी मृत्यु होती है, तो रामटहल शास्त्रानुसार उसकी दाहक्रिया संपन्न करते हैं और सभी संस्कारों का पालन करते हैं, जो मानवेतर संवेदना की पराकाष्ठा को दर्शाता है। कहानी में रामटहल और जवाहिर का संबंध केवल स्वामित्व का नहीं, बल्कि आत्मीयता और भावनात्मक निर्भरता का है। रामटहल के लिए जवाहिर पुत्र-समान हो जाता है। "मगर जब रामटहल आप पगहा हाथ में ले लेते और एक बार चुमकार कर कहते चलो बेटा, तो जवाहिर उन्मत्त होकर गाड़ी को ले उड़ता। दो-दो कोस तक बिना रुके, एक ही साँस में दौड़ता चला जाता। घोड़े भी उसका मुकाबला न कर सकते।" [16] इतना ही नहीं, वह जब तक चौके में उनके पास न बैठा हो, उन्हें भोजन में स्वाद नहीं आता। यह संबंध दर्शाता है कि पशु भी संवेदना, स्नेह और आत्मीयता के अधिकारी हो सकते हैं। इसी तरह, जब साधु महात्मा यह रहस्योद्घाटन करते हैं कि जवाहिर वास्तव में शिवटहल का पुनर्जन्म है, तो कथा में एक गहरा दार्शनिक आयाम जुड़ जाता है। "उसे विश्वासघात का प्रायश्चित्त करना आवश्यक था। उसने बेईमानी से तुम्हारा जितना धन हर लिया था, उसकी पूर्ति करने के लिए उसे तुम्हारे यहाँ पशु का जन्म दिया गया। यह निश्चय कर लिया गया कि छह वर्ष में प्रायश्चित्त पूरा हो जायगा। इतनी अवधि तक वह तुम्हारे यहाँ रहा। ज्यों ही अवधि पूरी हो गयी त्यों ही उसकी आत्मा निष्पाप और निर्लिप्त हो कर निर्वाणपद को प्राप्त हो गयी।" [17] यह कहानी का सबसे मार्मिक पक्ष है जहाँ एक सज्जन व्यक्ति शिवटहल, जिन्होंने विश्वासघात के दोष से ग्रसित होकर अपना जीवन परमार्थ में व्यतीत किया, वे पशु योनि में जन्म लेकर अपनी तपस्या पूर्ण करते हैं और अंततः मोक्ष प्राप्त करते हैं। इससे यह विश्वास पुष्ट होता है कि पशु भी केवल जड़-चेतना वाले प्राणी नहीं, बल्कि आत्मा, पूर्वकर्म और पुनर्जन्म की आध्यात्मिक संभावनाओं से युक्त जीव हैं।

यह हृदय परिवर्तन की उम्दा कहानी है। गाँव के लोगों द्वारा जवाहिर को अन्न-ग्रास देना यह दर्शाता है कि समाज भी पशु के प्रति अपनी दृष्टि को परिवर्तित कर सकता है। एक साधारण पशु गाँव में श्रद्धा और सम्मान का पात्र बन जाता है। आगे चलकर जब रामटहल को यह ज्ञात होता है कि "ऐसे धर्मात्मा प्राणी को जरा से विश्वासघात के लिए इतना कठोर दंड मिला तो मुझ जैसे कुकर्मी की क्या दुर्गति होगी" [18] तो वह अपने कुकर्मों को लेकर आत्मग्लानि और भय से व्याकुल हो उठते हैं। इस ग्लानि से उनके चित्त की दिशा बदल जाती है, और उनके भीतर दया, विवेक और धर्मबोध का उदय होता है। रामटहल का यह आंतरिक परिवर्तन इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य यदि चाहे तो पश्चाताप और आत्मविश्लेषण के माध्यम से अपने व्यक्तित्व और जीवन-दृष्टि को नया मोड़ दे सकता है।

इस प्रकार, प्रेमचंद की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए मानवेतर जीवों की चेतना और नैतिक उपस्थिति को भी गहराई से उद्घाटित करती हैं। विश्लेषित चारों कहानियाँ 'अधिकार चिंता', 'स्वत्व रक्षा', 'मुक्तिधन' और 'पूर्व संस्कार' में लेखक ने पशु पात्रों के माध्यम से प्रतीकात्मक रूप में विभिन्न मानवीय, दार्शनिक और नैतिक विमर्श प्रस्तुत किए हैं। टॉमी की 'अधिकार चिंता' और घोड़े की 'स्वत्व रक्षा' दो भिन्न धारणाओं को उजागर करती हैं। टॉमी जहां अपने अधिकार को बाहरी सत्ता और भय के चश्मे से देखता है, वहीं घोड़ा स्वत्व को आंतरिक आत्म-सम्मान और जीवन के नैतिक अधिकार के रूप में जीता है। दोनों का ही संघर्ष स्वयं के अधिकार और स्वत्त्व की रक्षा को लेकर है लेकिन, एक का अंत जहाँ अस्थिरता और मृत्यु है, वहीं दूसरे का अंत आत्म-सम्मान, संवेदना और करुणा को जगाने वाला बनता है। प्रेमचंद इन पात्रों के माध्यम से यह संकेत करते हैं कि वास्तविक अधिकार वह नहीं जिसे छीनकर या दबाकर पाया जाए, बल्कि वह है जो आत्मबल, विवेक, संघर्ष और नैतिकता से अर्जित और संरक्षित किया जाए। 'मुक्तिधन' और 'पूर्व संस्कार' दोनों ही हृदय परिवर्तन की उम्दा कहानी है। 'मुक्तिधन' में गाय और 'पूर्व संस्कार' बछड़ा न केवल संवेदना और नैतिकता के वाहक हैं, बल्कि वे मनुष्य के आत्म-परिष्कार और आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में प्रेरक भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, दोनों कहानियों में मानवेतर प्राणी करुणा, धर्म, आत्मा, मुक्ति और पुनर्जन्म की मूर्त अभिव्यक्ति बनकर समाज को हृदय परिवर्तन और आत्मशुद्धि की ओर उन्मुख करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद की दृष्टि में पशु केवल जीवन का हिस्सा नहीं, बल्कि मानव धर्म की पुनःस्थापना के माध्यम भी हैं। इसलिए इन कहानियों का विश्लेषण आज के एंथ्रोपोसीन युग में और भी अधिक प्रासंगिक और प्रेरणादायक सिद्ध होता है, क्योंकि ये न केवल मानव और प्रकृति के संबंधों को उजागर करती हैं, बल्कि मानवेतर प्राणियों के प्रति संवेदना और नैतिक उत्तरदायित्व की ओर भी हमारा ध्यान भी आकर्षित करती हैं।

संदर्भ सूची:

1. प्रेमचंद, मानसरोवर (अधिकार चिंता), भाग 6, सरस्वती प्रेस प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1946, पृ. 271
2. वहीं, पृ. 272
3. वहीं, पृ. 273
4. वहीं, पृ. 274
5. वहीं, पृ. 272
6. प्रेमचंद, मानसरोवर (स्वत्त्व रक्षा), भाग 8, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, पृ. 190
7. वहीं, पृ. 193
8. वहीं, पृ. 193-194
9. प्रेमचंद, मानसरोवर (मुक्तिधन), भाग 3, सरस्वती प्रेस, वाराणसी, संस्करण 1947, पृ.168
10. वहीं.
11. वहीं, पृ. 175
12. वहीं.
13. वहीं.
14. वहीं
15. प्रेमचंद, मानसरोवर (पूर्व-संस्कार), भाग 8, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, पृ. 199
16. वहीं.
17. वहीं, पृ. 202
18. वहीं.